

साबरमती प्रवाह

सातवां (अंक)



आधार वर्ष 2023 में राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यों के लिए महाप्रबंधक पश्चिम रेलवे की प्रतिष्ठित कार्य कुशलता शील्ड प्राप्त हुई।



वर्ष, 2022-23 के दौरान नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अहमदाबाद में राजभाषा के श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए द्वितीय पुरस्कार।

इंजीनियरी कारखाना, साबरमती



अनुक्रमणिका



* संरक्षक की कलम से	-1
* मार्गदर्शिन	-2
* हिंदी करे अपील	-3
* स्वास्थ्य प्रवाह	-4
* *कॉन - नारी	-6
* परिचय प्रवाह- रहीम	-7
* कबूतर (कहानी)	- 11
* राजभाषा गतिविधियां	-12
* साइबर सुरक्षा टिप्स	-14
* कार्य को सम्मान	-19
* हास्य प्रवाह	-20

संपादक मंडल

संरक्षक



संतोष कुमार

मुख्य कारखाना प्रबंधक

मार्गदर्शक



डी. एस. यादव

उप मुख्य राजभाषा अधिकारी व
उप मुख्य इंजीनियर

डिजाइन व संपादन



नवनीत कुमार धनेरिया

वरिष्ठ अनुवादक

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। संपादक मंडल का इससे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

कृपया अपनी प्रतिक्रिया एवं सुझाव हमें इस पते पर पहुंचाएं:

राजभाषा विभाग, इंजीनियरी कारखाना,
काली गाम, साबरमती, अहमदाबाद- 382470

ईमेल : rajbhasha.sbi@gmail.com

दूरभाष (रेलवे): 093-43033 📞 9722140111



भाषा भावों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। भाषा सहज व सरल होनी चाहिए, जिससे सामने वाला हमारे भावों को सहजता से समझ सके। सरकारी कामकाज में हिंदी इसके लिए सहायक सिद्ध होती है। हिंदी में कार्य करना हमारा संवैधानिक कर्तव्य भी है। कारखाना इकाई में राजभाषा के क्षेत्र में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है इसे नकारा नहीं जा सकता फिर भी हमें इस स्थिति में और सुधार करते हुए इसे और अधिक सुदृढ़ बनाने की आवश्यकता है। इसके लिए सभी अधिकारी उदाहरण के रूप में आगे आएं। सभी अधिकारी व वरिष्ठ कर्मचारी अपना अधिकाधिक कार्य हिंदी में करते हुए अपने अधीन अधिकारियों व कर्मचारियों को प्रेरित करें। सभी राजभाषा प्रोत्साहन व पुरस्कार योजनाओं में अधिकाधिक संख्या में भाग लें।

साबरमती प्रवाह के सातवें अंक के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को हार्दिक शुभकामनाएं।

संतोष कुमार

मुख्य कारखाना प्रबंधक

मार्गदर्शन



साबरमती प्रवाह का सातवाँ अंक सौंपते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही हैं। इसके प्रकाशन से जुड़े सभी कर्मचारियों को धन्यवाद।

हमें अधिकाधिक कार्य हिंदी में करना चाहिए क्योंकि हिंदी सहज व सरलता से समझी जाने वाली भाषा है। हमें अपनी भाषा पर गर्व होना चाहिए।

इस पत्रिका के नियमित प्रकाशन के लिए सभी से आग्रह है कि अधिकाधिक संख्या में अपनी मूल रचनाएं भिजवाएं ताकि यह पत्रिका अधिक सुदृढ़ हो, जिससे पाठकों का मनोरंजन व ज्ञानवर्द्धन हो तथा इसकी सार्थकता पूर्ण हो सके।

डॉ. एम्. यादव
उप मुख्य राजभाषा अधिकारी व
उप मुख्य इंजीनियर, साबरमती

संघ की राजभाषा नीति

संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी हैं। संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतराष्ट्रीय रूप है {संविधान का अनुच्छेद 343 (1)}। परन्तु हिंदी के अतिरिक्त अंग्रेजी भाषा का प्रयोग भी सरकारी कामकाज में किया जा सकता है (राजभाषा अधिनियम की धारा 3)।

संसद का कार्य हिंदी में या अंग्रेजी में किया जा सकता है। परन्तु राज्यसभा के सभापति महोदय या लोकसभा के अध्यक्ष महोदय विशेष परिस्थिति में सदन के किसी सदस्य को अपनी मातृभाषा में सदन को संबोधित करने की अनुमति दे सकते हैं। {संविधान का अनुच्छेद 120}

किन प्रयोजनों के लिए केवल हिंदी का प्रयोग किया जाना है, किन के लिए हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं का प्रयोग आवश्यक है और किन कार्यों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाना है, यह राजभाषा अधिनियम 1963, राजभाषा नियम 1976 और उनके अंतर्गत समय समय पर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की ओर से जारी किए गए निर्देशों द्वारा निर्धारित किया गया है।

राजभाषा विभाग की वेबसाइट से साभार...



हम सब भारतवासियों का यह
अनिवार्य कर्तव्य है कि हम हिंदी
को अपनी भाषा के रूप में अपनाएं।

डॉ. बी. आर. अंबेडकर

राजभाषा विभाग, इंजीनियरी कारखाना, साबरमती।



फ्राइड राइस सिंड्रोम

कई लोग बासी खाना, बिना सोचे-समझे खा लेते हैं। एक दिन पुराने चावल और कोई सब्जी बच गई तो उसे रख लेते हैं। ये सोचकर कि अगले दिन का लंच इससे ही निपटा देंगे। हम सबके घरों में अक्सर ऐसा ही होता है, पर अगर आप बासी खाना खाते हैं, खासतौर पर चावल तो कुछ चीजों का ध्यान रखना बेहद जरूरी है, नहीं तो जान पर आ सकती है। आप कहेंगे, अमा! छोड़ो! हमने तो जिंदगी भर बासी खाना खाया है। कुछ नहीं हुआ। लेकिन जरूरी नहीं दांव हर बार सही ही लगे।

दरअसल आजकल 'फ्राइड राइस सिंड्रोम' नाम की एक चीज बहुत चर्चा में है। इससे जुड़ी खबरें सोशल मीडिया पर शेयर की जा रही हैं। 'फ्राइड राइस सिंड्रोम' का फ्राइड राइस से कोई लेना देना नहीं है। कुछ साल पहले एक खबर आई थी कि बासी खाना खाने के बाद लड़के की मौत हो गई थी। वजह थी फ्राइड राइस सिंड्रोम। ये क्या है, इसमें क्या-क्या होता है, ये सारी चीजें जानेंगे।

फ्राइड राइस सिंड्रोम क्या है?

ये हमें बताया डॉक्टर विक्रमजीत सिंह ने।

फ्राइड राइस सिंड्रोम बीमारी अभी इसलिए चर्चा में है क्योंकि टिकटों पर इससे जुड़ा एक पोस्ट शेयर हुआ था। इस पोस्ट में बताया गया था कि बेल्जियम के एक लड़के ने करीब पांच दिन पहले बनी स्पेगेटी को सॉस के साथ खाया था। स्पेगेटी खाने के कुछ देर बाद ही उस लड़के को उल्टियां हुईं, जिसके कुछ देर बाद वो सो गया और नींद में ही उसकी मौत हो गई। पोस्टमार्टम में ये पता चला कि लड़के की मौत एक्थ्यूट लिबर फेलियर की वजह से हुई है। ऐसा होने की वजह है 'बैसिलस सिरियस' (*Bacillus cereus*) नाम का बैक्टीरिया।

'बैसिलस सिरियस' बहुत ही आम बैक्टीरिया है जो हमारे चारों तरफ मौजूद है। ये अक्सर खाने की चीजों में भी पाया जाता है। जैसे कि अगर खाने की किसी चीज को खाने में न रखकर, बाहर हो छोड़ दिया गया हो और तीन-चार दिन बाद उस चीज को कोई खाता है तो उसी में बैक्टीरिया बीमार कर सकता है। यानी 'फ्राइड राइस सिंड्रोम' एक तरह की फूड पॉइजनिंग है।

लक्षण:

'फ्राइड राइस सिंड्रोम' में दो तरह के लक्षण दिखते हैं। पहला लक्षण है उल्टी और दूसरा लक्षण है दस्त। उल्टियों की वजह से शरीर में पानी की कमी हो जाती है और बुखार भी हो जाता है। अगर उल्टियों को रोका नहीं गया तो डिहाइड्रेशन की वजह से किडनी और लिबर को खतरा हो सकता है। ऐसा ही दस्त लगने पर भी होता है। इस दौरान उल्टियां कम लगती हैं, लेकिन दस्त की वजह से शरीर में पानी की कमी हो जाती है।

'बैसिलस सिरियस' बैक्टीरिया अक्सर चावल या चावलों से बनी चीजों में पाया जाता है। जब ये खाना सड़ जाता है तो उस दौरान ये बैक्टीरिया खाने में जहरीले तत्व छोड़ देता है। इन जहरीले तत्वों की वजह से उल्टी और दस्त लगते हैं।

बचाव:

- हमेशा हाथ धोकर खाना खाएं।
- पकाने से पहले कच्ची सब्जियों और दाल-चावल को अच्छे से धो लें।

- बासी खाना न खाएं।
- अगर खाना बच गया है तो, उसे फ्रिज में रख दें।
- फ्रिज से निकालकर खाने को अच्छी तरह से गर्म करके ही खाएं।
- कभी भी 12 घंटे से ज्यादा पुराना खाना न खाएं।

फ्राइड राइस सिंड्रोम से घबराने की जरूरत नहीं है। ये बीमारी फ्राइड राइस खाने से नहीं होती है। ये सिर्फ एक तरह की फूड पॉइजनिंग है, इससे बचाव करना आसान है।

(यहां बताई गई बातें, इलाज के तरीके और खुराक की जो सलाह दी जाती है, वो विशेषज्ञों के अनुभव पर आधारित है। किसी भी सलाह को अमल में लाने से पहले अपने डॉक्टर से जरूर पूछें। दी लल्लनटॉप आपको अपने आप दवाइयां



✍ 'दी लल्लनटॉप' से साभार...

साबरमती कारखाना इकाई के अधिकारियों व कर्मचारियों से पत्रिका हेतु स्वरचित लेख, कहानी, कविता, पुस्तक समीक्षा इत्यादि आमंत्रित हैं। चयनित लेखों को पत्रिका में स्थान दिया जाएगा तथा उनके लेखकों को रेलवे बोर्ड के दिनांक 11.07.2018 के पत्र संख्या हिंदी-99-रे.रा.भा./3 के अनुसार मानदेय प्रदान किया जाएगा। यह मानदेय उनके नियमित वेतन के माध्यम से दिया जाएगा। मानदेय निम्नांकित हैं:

क. लेख/कहानी/नाटक	1000/- ₹ (एक हजार ₹ मात्र)
ख. कविता/पुस्तक समीक्षा	400/- ₹ (चार सौ ₹ मात्र)

अपनी मूल रचनाएँ इस कार्यालय को मेल करें तथा इस आशय की घोषणा करें कि "यह मेरी मूल रचना है



राष्ट्र के एकीकरण के लिए सर्वमान्य
भाषा से अधिक बलशाली कोई तत्व नहीं है।
मेरे विचार में हिंदी ही ऐसी भाषा है।
लोकमान्य बालगंगाधर तिलक

राजभाषा विभाग, इंजीनियरी कारखाना, साबरमती ।



कौन

पति-पत्नी शाम की सँर को निकले,
पत्नी आगे और पति पीछे- पीछे।

पति ने देखा पत्नी के आगे एक गधा चल रहा था,
पति के दिमाग खुराफाती कीड़ा पल रहा था।

पति ने कहा “देखो, तुम्हारे आगे कौन जा रहा है?”
पत्नी मुस्कुराते हुए बोली: “वही जो पीछे आ रहा है।”



नारी



एक साहब फरमा रहे थे कि नारी शक्ति है, आग है,
आँधी है, तूफान है।
नारी को अबला कहना, नारी का अपमान है।

मैंने कहा आप सही हैं, नहीं हैं कुछ भी फेक।
और तुझमें हिम्मत है तो; बला कहके देखा।

नवनीत कुमार धनेरिया
वरिष्ठ अनुवादक,
सइंजीनियरी कारखाना





परिचय प्रवाह रहीम

रहीम अथवा अब्दुरहीम खानखाना अथवा अब्दुरहीम खाँ हिन्दी के प्रसिद्ध कवि थे। अकबर के दरबार में इनका महत्वपूर्ण स्थान था। रहीम अकबर के नवरत्नों में से एक थे। गुजरात के युद्ध में शौर्य प्रदर्शन के कारण अकबर ने इन्हें 'खानखाना' की उपाधि दी थी। रहीम अरबी, तुर्की, फ़ारसी, संस्कृत और हिन्दी के अच्छे ज्ञाता थे। इन्हें ज्योतिष का भी ज्ञान था। रहीम की ग्यारह रचनाएँ प्रसिद्ध हैं। इनके काव्य में मुख्य रूप से श्रंगार, नीति और भक्ति के भाव मिलते हैं।

जीवन परिचय

अब्दुरहीम खाँ, खानखाना मध्ययुगीन दरबारी संस्कृति के प्रतिनिधि कवि थे। अकबरी दरबार के हिन्दी कवियों में इनका महत्वपूर्ण स्थान है। ये स्वयं भी कवियों के आश्रयदाता थे। केशव, आसकरन, मण्डन, नरहरि और गंग जैसे कवियों ने इनकी प्रशंसा की है। ये अकबर के अभिभावक बैरम खाँ के पुत्र थे। अब्दुल रहीम खानखाना का जन्म 17 दिसम्बर, 1556 ई. (माघ, कृष्ण पक्ष, गुरुवार) को सम्राट अकबर के प्रसिद्ध अभिभावक बैरम खाँ (60 वर्ष) के यहाँ लाहौर में हुआ था। उस समय रहीम के पिता बैरम खाँ पानीपत के दूसरे युद्ध में हेमू को हराकर बाबर के साम्राज्य की पुनर्स्थापना कर रहे थे। बैरम खाँ, अमीर अली शूकर बेग के वंश में से थे। जबकि उनकी माँ सुलताना बेगम मेवाती जमाल खाँ की दूसरी पत्नी थी। कविता करना बैरम खाँ के वंश की खानदानी परम्परा थी। बाबर की सेना में भर्ती होकर रहीम के पिता बैरम खाँ अपनी स्वामी भक्ति और वीरता से हुमायूँ के विश्वासपात्र बन गए थे।

हुमायूँ की मृत्यु के बाद बैरम खाँ ने 14 साल के शहजादे अकबर को राजगद्दी पर बैठा दिया और खुद उसका संरक्षक बनकर मुगल साम्राज्य को स्थापित किया था। लेकिन वर्दी खानखाना के प्राणदण्ड, दरबारियों की ईर्ष्या, अकबर की माता हमीदा बानो और धाय माहम अनगा की दुरभि सन्धि एवं बाबर की बेटी गुलरुख बेगम की लड़की सईदा बेगम से शादी तथा अमीरों के सामने अकबर के रूप में उपस्थित होने के विकल्प ने बैरम खाँ को सन् 1560 में अकबर के पूर्ण राज्य ग्रहण करने से धीरे-धीरे विद्रोही बना दिया था।

साहित्यिक परिचय

भक्तिकाल हिन्दी साहित्य में रहीम का महत्त्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने अरबी, फ़ारसी, संस्कृत, हिन्दी आदि का गहन अध्ययन किया। वे राजदरबार में अनेक पदों पर कार्य करते हुए भी साहित्य सेवा में लगे रहे। रहीम का व्यक्तित्व बहुत प्रभावशाली था। वे स्मरण शक्ति, हाज़िर-जवाबी, काव्य और संगीत के मर्मज्ञ थे। वे युद्धवीर के साथ-साथ दानवीर भी थे। अकबर के दरबारी कवि गंग के दो छन्दों पर रीझकर इन्होंने 36 लाख रुपये दे दिए थे। रहीम ने अपनी कविताओं में अपने लिए 'रहीम' के बजाए 'रहिमन' का प्रयोग किया है। वे इतिहास और काव्य जगत में अब्दुल रहीम खानखाना के नाम से प्रसिद्ध हैं। रहीम मुसलमान होते हुए भी कृष्ण भक्त थे। उनके काव्य में नीति, भक्ति-प्रेम तथा श्रंगार आदि के दोहों का समावेश है।

रहीम की भाषा

रहीम ने अपने अनुभवों को सरल और सहज शैली में मार्मिक अभिव्यक्ति प्रदान की। उन्होंने ब्रज भाषा, पूर्वी अवधी और खड़ी बोली को अपनी काव्य भाषा बनाया। किन्तु ब्रज भाषा उनकी मुख्य शैली थी। गहरी से गहरी बात भी उन्होंने बड़ी सरलता से सीधी-सादी भाषा में कह दी। भाषा को सरल, सरस और मधुर बनाने के लिए तद्भव शब्दों का अधिक प्रयोग किया।

रहीम अरबी, तुर्की, फ़ारसी, संस्कृत और हिन्दी के अच्छे जानकार थे। हिन्दू-संस्कृति से ये भली-भाँति परिचित थे। इनकी नीतिपरक उक्तियों पर संस्कृत कवियों की स्पष्ट छाप परिलक्षित होती है।

कुल मिलाकर इनकी ॥ रचनाएँ प्रसिद्ध हैं। इनके प्रायः 300 दोहे 'दोहावली' नाम से संग्रहीत हैं। मायाशंकर याज्ञिक का अनुमान था कि इन्होंने सतसई लिखी होगी किन्तु वह अभी तक प्राप्त नहीं हो सकी है। दोहों में ही रचित इनकी एक स्वतन्त्र कृति 'नगर शोभा' है। इसमें 142 दोहे हैं। इसमें विभिन्न जातियों की स्त्रियों का श्रृंगारिक वर्णन है।

रहीम अपने बरवै छन्द के लिए प्रसिद्ध हैं। इनका 'बरवै' है। इनका 'बरवै नायिका भेद' अवधी भाषा में नायिका-भेद का सर्वोत्तम ग्रन्थ है। इसमें भिन्न-भिन्न नायिकाओं के केवल उदाहरण दिये गये हैं। मायाशंकर याज्ञिक ने काशीराज पुस्तकालय और कृष्णबिहारी मिश्र पुस्तकालय की हस्त लिखित प्रतियों के आधार पर इसका सम्पादन किया है। रहीम ने बरवै छन्दों में गोपी-विरह वर्णन भी किया है।

मेवात से इनकी एक रचना 'बरवै' नाम की इसी विषय पर रचित प्राप्त हुई है। यह एक स्वतन्त्र कृति है और इसमें 101 बरवै छन्द हैं। रहीम के श्रृंगार रस के 6 स्रोत प्राप्त हुए हैं। इनके 'श्रृंगार स्रोत' ग्रन्थ का उल्लेख मिलता है किन्तु अभी यह प्राप्त नहीं हो सका है।

रहीम की एक कृति संस्कृत और हिन्दी खड़ी बोली की मिश्रित शैली में रचित 'मदनाष्टक' नाम से मिलती है। इसका वर्ण्य-विषय कृष्ण की रासलीला है और इसमें मालिनी छन्द का प्रयोग किया गया है। इसके कई पाठ प्रकाशित हुए हैं। 'सम्मेलन पत्रिका' में प्रकाशित पाठ अधिक प्रामाणिक माना जाता है। इनके कुछ भक्ति विषयक स्फुट संस्कृत श्लोक 'रहीम काव्य' या 'संस्कृत काव्य' नाम से प्रसिद्ध हैं। कवि ने संस्कृत श्लोकों का भाव छप्पय और दोहा में भी अनूदित कर दिया है।

कुछ श्लोकों में संस्कृत के साथ हिन्दी भाषा का प्रयोग हुआ है। रहीम बहुज्ञ थे। इन्हें ज्योतिष का भी ज्ञान था। इनका संस्कृत, फ़ारसी और हिन्दी मिश्रित भाषा में 'खेट कौतुक जातकम्' नामक एक ज्योतिष ग्रन्थ भी मिलता है किन्तु यह रचना प्राप्त नहीं हो सकी है। 'भक्तमाल' में इस विषय के इनके दो पद उद्धृत हैं। विद्वानों का अनुमान है कि ये पद 'रासपंचाध्यायी' के अंश हो सकते हैं।

रहीम ने 'वाकेआत बाबरी' नाम से बाबर लिखित आत्मचरित का तुर्की से फ़ारसी में भी अनुवाद किया था। इनका एक 'फ़ारसी दीवान' भी मिलता है।

रहीम के काव्य का मुख्य विषय श्रृंगार, नीति और भक्ति है। इनकी विष्णु और गंगा सम्बन्धी भक्ति-भावमयी रचनाएँ वैष्णव-भक्ति आन्दोलन से प्रभावित होकर लिखी गयी हैं। नीति और श्रृंगारपरक रचनाएँ दरबारी वातावरण के अनुकूल हैं। रहीम की ख्याति इन्हीं रचनाओं के कारण है। बिहारी लाल और मतिराम जैसे समर्थ

कवियों ने रहीम की शृंगारिक उक्तियों से प्रभाव ग्रहण किया है। व्यास, वृन्द और रसनिधि आदि कवियों के नीति विषयक दोहे रहीम से प्रभावित होकर लिखे गये हैं। रहीम का ब्रजभाषा और अवधी दोनों पर समान अधिकार था। उनके बरवै अत्यन्त मोहक प्रसिद्ध हैं कि तुलसीदास को 'बरवै रामायण' लिखने की प्रेरणा रहीम से ही मिली थी। 'बरवै' के अतिरिक्त इन्होंने दोहा, सोरठा, कवित्त, सर्वैया, मालिनी आदि कई छन्दों का प्रयोग किया है।

रचनाएँ

रहीम अनेक भाषाओं के ज्ञाता थे। उन्होंने तुर्की भाषा के एक ग्रन्थ 'वाक्यात बाबरी' का फ़ारसी में अनुवाद किया। फ़ारसी में अनेक कविताएँ लिखीं। 'खेट कौतूक जातकम्' नामक ज्योतिष ग्रन्थ लिखा, जिसमें फ़ारसी और संस्कृत शब्दों का अनूठा मेल था। इनका काव्य इनके सहज उद्गारों की अभिव्यक्ति है। इन उद्गारों में इनका दीर्घकालीन अनुभव निहित है। ये सच्चे और संवेदनशील हृदय के व्यक्ति थे। जीवन में आने वाली कटु-मधुर परिस्थितियों ने इनके हृदय-पट पर जो बहुविध अनुभूति रेखाएँ अंकित कर दी थी, उन्हीं के अकृत्रिम अंकन में इनके काव्य की रमणीयता का रहस्य निहित है। इनके 'बरवै नायिका भेद' में काव्य रीति का पालन ही नहीं हुआ है, वरन् उसके माध्यम से भारतीय गार्हस्थ्य-जीवन के लुभावने चित्र भी सामने आये हैं। मार्मिक होने के कारण ही इनकी उक्तियाँ सर्वसाधारण में विशेष रूप से प्रचलित हैं। रहीम-काव्य के कई संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। इनमें:-

रहीम रत्नावली (सं. मायाशंकर याज्ञिक-१९२४ ई.) और रहीम विलास (सं. ब्रजरत्नदास-१९४४ ई., द्वितीयावृत्ति) प्रामाणिक और विश्वसनीय हैं। इनके अतिरिक्त रहिमन विनोद (हि. सा. सम्मे.), रहीम 'कवितावली (सुरेन्द्रनाथ तिवारी), रहीम' (रामनरेश त्रिपाठी), रहिमन चंद्रिका (रामनाथ सुमन), रहिमन शतक (लाला भगवानदीन) आदि संग्रह भी उपयोगी हैं।

✍ इंटरनेट से साभार...



हिंदी संस्कृत की बेटियों में
सबसे अच्छी और शिरोमणि है।

ग्रियर्सन



राजभाषा विभाग, इंजीनियरी कालेज, साबरमती ।

कबूतर



सुनील अहमदाबाद के एक बहुमंजिला अपार्टमेंट में रहता था। अहमदाबाद में गर्मियों का मौसम बेरहम होता है। उसने गौर किया कि लोग कबूतरों को खिला-पिला रहे हैं, उसे अच्छा लगा। उसके अपार्टमेंट के बाहर रोज कबूतरों का हूजूम इकट्ठा होने लगा। सड़क पर दाने बिखरे होते थे जिसे कबूतर खा रहे होते थे। इन पक्षियों को अब खाना ढूँढने के लिए अधिक उड़ने की आवश्यकता नहीं

थी। एक दिन उसने रास्ते पर एक मृत कबूतर देखा। शायद उसे किसी वाहन ने कुचल दिया हो। वह बहुत चिंतित हो गया। उसे लगा कि कबूतर के लिए जीवन क्या होता है? उड़ना। उसने सोचा कि क्या पक्षियों के लिए खाना खोजना, संगठन करना, और समुदाय में रहना और निरंतर उड़ते रहकर नए आयामों की तलाश में ही तो जीवन के मायने हैं। पक्षी सड़कों पर वाहनों से कुचले जाने के लिए नहीं बने। आसमान से गिरकर मर जाना, फिर भी ज्यादा सम्मानजनक होगा उनके लिए। वह अपने आवास में चला गया और अपने जीवन के बारे में सोचने लगा। उसे अपने दोस्त याद आने लगे जो बचपन में हमेशा उसके साथ रहते थे। वह याद करता कि वे हमेशा खेलते और एक-दूसरे के साथ समय बिताते थे। उसने महसूस किया कि उसने अपनी सच्ची मानवीयता को खो दिया है। वह अब बहुत अधिक आरामतलब हो गया है। इसका दायरा बहुत सीमित हो गया है। उसके दोस्त और संबंधी अब अपरिचित होते जा रहे हैं और उसने अपने जीवन में सच्चे अर्थ को खो दिया है। उसने समझा कि जीवन का सच्चा अर्थ संबंध, संगठन, और साझेदारी में ही खोजा जा सकता है, जो उसे असली संतोष और समृद्धि देगा। वह सोच में पड़ गया कि क्या कभी वह सच्चे अर्थ की खोज में अपनी जिदगी को दोबारा परिभाषित कर पाएगा या व्यर्थ में यूँ ही एक दिन दुनिया से चला जाएगा ठीक उसे कबूतर की तरह!!!



सौरभ कुमार गौतम
सीनियर सेक्शन इंजीनियर,
सिगनल कारखाना, साबरमती



राजभाषा गातीवीधयां



विश्व हिंदी दिवस व हिंदी संगोष्ठी दिनांक: 21.02.2025



अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस व हिंदी कवि सम्मेलन
दिनांक: 21.02.2025



हिंदी माह, 2025



हिंदी साहित्यकारों की जयंतियाँ



साइबर सुरक्षा टिप्स



साइबर सुरक्षा को सूचना प्रौद्योगिकी सुरक्षा या इलेक्ट्रॉनिक सूचना सुरक्षा के रूप में भी जाना जाता है। साइबर सुरक्षा सिस्टम, नेटवर्क और प्रोग्राम को डिजिटल हमलों से बचाती है। ये साइबर हमले आमतौर पर संवेदनशील जानकारी तक पहुँचने, बदलने या नष्ट करने के उद्देश्य से होते हैं; उपयोगकर्ताओं से धन की मांग करना, या नियमित कॉर्पोरेट संचालन में बाधा डालना। फोर्ब्स के अनुसार, 2022 में विभिन्न प्रकार की खतरनाक साइबर सुरक्षा चिताएँ उत्पन्न होंगी, जिनमें आपूर्ति श्रृंखला व्यवधान, स्मार्ट उपकरणों से बड़े खतरे

शामिल हैं। साइबरक्राइम मैगज़ीन के अनुसार, 2025 तक, साइबर अपराध से दुनिया को सालाना 101.5 ट्रिलियन डॉलर का नुकसान होगा। साइबर खतरों के कुछ स्रोत राष्ट्र राज्य, साइबर आपराधिक संगठन, आतंकवाद और हैकर्स / हैकटिविस्ट हैं। उभरती हुई तकनीक, सुरक्षा प्रवृत्तियों और खतरे की खुफिया जानकारी के शीर्ष पर बने रहना मुश्किल हो सकता है। कई प्रकार के साइबर खतरों से डेटा और अन्य संपत्तियों की सुरक्षा करना आवश्यक है।

Anydesk ऐप चेतावनी:

Anydesk ऐप चेतावनी: धोखाबाज आपको कैसे लुभा सकते हैं?:

भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने बैंकों और ग्राहकों को AnyDesk ऐप के इस्तेमाल के खिलाफ चेतावनी दी है। "Playstore या किसी अन्य स्रोत से" AnyDESK "डाउनलोड न करें, जिसे धोखाधड़ी करने वाला अपने मोबाइल डिवाइस से नियंत्रण करने और लेनदेन करने के लिए उपयोग कर सकता है।

आपको धोखाधड़ी करने वाला से एक फोन कॉल प्राप्त हो सकता है, जो आपके स्मार्टफोन या मोबाइल बैंकिंग ऐप में समस्याओं को ठीक करने की पेशकश के लिए एक तकनीकी कंपनी/ बैंक की प्रतिनिधि होने का दावा करेगा।

धोखाधड़ी करने वाला आपको प्ले स्टोर या ऐप स्टोर से AnyDesk 'जैसे मोबाइल ऐप डाउनलोड करने का लालच देगा, जो उसे आपके मोबाइल पर रिमोट एक्सेस प्रदान कर सकता है। एप्प की इंस्टॉलेशन के बाद ('AnyDesk' एप्प के मामले में), एक 9-अंकीय कोड उत्पन्न होगा, जिसे धोखाधड़ी करने वाला आपसे साझा करने के लिए कहेगा। फिर धोखाधड़ी करने वाला आपको आगे कुछ निश्चित अनुमति देने के लिए कहेगा। एक बार अपने दे दी, अब आपके मोबाइल डिवाइस धोखाधड़ी करने वाले के नियंत्रण में है।

इसके अलावा, मोबाइल बैंकिंग क्रेडेंशियल और पिन आपके पास से चुराए गए (चोरी) हैं और अब धोखाधड़ी करने वाला आपके मोबाइल ऐप जो पहले से इंस्टॉल था से वित्तीय लेनदेन करने का विकल्प चुन सकते हैं।

• धोखाधड़ी करने वाला आपको एक एसएमएस फॉरवर्ड करके और आपको सलाह देगा कि इसे अपने फोन से एक विशिष्ट मोबाइल नंबर पर फॉरवर्ड करें। इसके आधार पर, धोखाधड़ी करने वाला अपने मोबाइल डिवाइस पर अपने मोबाइल नंबर / खाते को यूपीआई के साथ लिंक / रजिस्टर कर सकता है।

• धोखाधड़ी करने वाला बाद में डेबिट कार्ड नंबर, पिन, वैधता दिनांक, ओटीपी जैसे खाते से संबंधित गोपनीय क्रेडेंशियल्स की तलाश करता है और एमपीआईएन सेट करता है जो अंतरण को प्रमाणित करने के लिए उपयोग किया जाता है। कभी-कभी, धोखाधड़ी करने वाला आपके वीपीए के लिए "कलेक्ट रिक्वेस्ट" भी भेज सकते हैं और आपसे पूछ सकते हैं कि संबंधित यूपीआई ऐप पर व्युत्क्रम / रिफंड प्राप्त करने के लिए इसे अनुमोदित / प्रमाणित करें। यह मानते हुए कि आपको अपने खाते में क्रेडिट / रिफंड मिलेगा, आप अनुरोध को स्वीकार करते हैं। एमपीआईएन के साथ लेन-देन को प्रमाणित करना [जो केवल आप से संबंधित है] लेकिन एक बार आपका कलेक्ट रिक्वेस्ट अनुमोदित / प्रमाणित होने के बाद आपके खाते से डेबिट हो जाएगा और आपके अपना सम्पूर्ण पैसे खो सकते हैं।

आपको क्या करें और क्या न करें को अनुसरण करना चाहिए:

- कपटपूर्ण कॉल (विशिंग) के प्रति सचेत रहें जो आपसे ऐप्स डाउनलोड करने या गोपनीय जानकारी साझा करने के लिए कहें (ऐसी कॉल तुरंत काटें) यदि आपने "AnyDesk" ऐप पहले ही डाउनलोड कर लिया है और इसकी आवश्यकता नहीं है, तो इसे अनइंस्टॉल कर दें।
- कृपया अपने भुगतान या मोबाइल बैंकिंग से संबंधित ऐप पर ऐप-लॉक को सक्षम करें।
 - किसी भी संदिग्ध गतिविधि की रिपोर्ट अपने नजदीकी बैंक शाखा / वास्तविक ग्राहक सेवा नंबर पर ही करें।
 - अपने बैंकिंग पासवर्ड साझा न करें या उन्हें अपने मोबाइल हैंडसेट में संग्रहीत न करें।
 - कॉल पर अपने अन्य संवेदनशील वित्तीय विवरण जैसे यूपीआई पिन / एमपीआईएन, डेबिट / क्रेडिट कार्ड, सीवीवी, वैधता समाप्ति तिथि, ओटीपी, एटीएम पिन, बैंक खाता विवरण इत्यादि साझा न करें।
 - किसी अजनबी को ऐप स्टोर / प्ले स्टोर के माध्यम से मोबाइल ऐप इंस्टॉल करने या आपको अपने मोबाइल की सेटिंग बदलने का निर्देश के लिए मार्गदर्शन करने की अनुमति न दें।
 - किसी टेक कंपनी / बैंक से तथाकथित प्रतिनिधि के अनुरोध पर प्राप्त किसी भी अवांछित एसएमएस को अग्रोषित न करें।
 - गूगल सर्च के माध्यम से प्राप्त विभिन्न व्यापारियों / संस्थाओं / बैंकों आदि की ग्राहक सेवा नंबर पर भरोसा न करें, क्योंकि वे नकली हो सकते हैं।
 - टेक कंपनी / बैंक से तथाकथित प्रतिनिधि के अनुरोध पर प्राप्त किसी भी अवांछित एसएमएस को अग्रोषित न करें।

फिशिंग ई-मेल

- अज्ञात स्रोतों से प्राप्त संलग्नों को डाउनलोड या लिंक पर क्लिक ना करें।
- संदिग्ध पाए गए मेल को आगे प्रेषित/जवाब ना दें।
- अज्ञात स्रोतों से प्राप्त मेलों से सावधान रहें।
- मेल पर व्यक्तिगत या वित्तीय जानकारी (यूजर नेम, पासवर्ड, क्रेडिट/डेबिट कार्ड आदि) को साझा ना करें।
- अनचाहे ईमेल, जो तत्काल कार्रवाई की मांग करते हैं, ऐसे मेलों पर एहतियात बरतें एवं सावधान रहें।
- वेबसाइट के यूआरएल पर ध्यान दें। फ़ाड साइट भी वैध साइट की तरह ही दिखती है लेकिन इसके यूआरएल की वर्तनी में भिन्नता होती है। जैसे 'l' की के स्थान पर '1' के द्वारा पहचाना जा सकता है।
- मेल में संलग्न किसी भी लिंक पर क्लिक करने से पहले हमेशा दो बार सोचें।

टर्नेट सुरक्षा

- पॉप-अप को बिना देखे उस पर क्लिक ना करें।
- जो सॉफ्टवेयर बैंक द्वारा अनुमोदित नहीं है, उस सॉफ्टवेयर को डाउनलोड न करें।
- बैंक से संबंधित किसी भी डेटा को इंटरनेट पर अपलोड ना करें।
- अपनी इंटरनेट एकाउंट और पासवर्ड के लिए यूजर खुद जिम्मेदार होगा।
- यूजर यह सुनिश्चित करें कि वे मेल में या किसी अन्य वेबसाइट में दिए गए लिंक पर क्लिक कर वेबसाइट का एक्सेस नहीं करते हैं।

ब्राउज़र सुरक्षा

- वेब ब्राउज़र के पुराने संस्करण सुरक्षित नहीं हैं अतः उन्हें अद्यतन किया जाना चाहिए।
- पॉप अप को गलत गतिविधियों के लिए उपयोग किया जा सकता है अतः पॉप अप को ब्लॉक कर दें।

वाई-फ़ाई सुरक्षा

- वाई-फ़ाई नेटवर्क को शुरू करने के लिए ऑटो-कनेक्ट विकल्प को एनेबल ना करें।
- ब्रॉडबैंड कनेक्टिविटी के उपयोग ना होने पर इसे ओपन की स्थिति में ना रखें।
- कार्यालय या सार्वजनिक स्थानों के अज्ञात वाई-फ़ाई नेटवर्क को कनेक्ट ना करें।
- पहले से मौजूद एडमिनिस्ट्रेटर पासवर्ड एवं यूजर नेम को बदलें।

पासवर्ड सुरक्षा

- ऐसा पासवर्ड रखें जिसका अनुमान लगाना कठिन हो।
- सभी एकाउंटों के लिए एक जैसा पासवर्ड का उपयोग ना करें।

- पासवर्ड को जहां-तहां लिख कर ना रखें।
 - अपने व्यक्तिगत जानकारी जैसे जन्म तिथि, नाम, मोबाइल नंबर आदि किसी के साथ साझा ना करें।
 - उपयोग किए गए पिछले पासवर्ड से नया पासवर्ड एकदम अलग होना चाहिए।
 - आपके यूजर आईडी द्वारा किए गए कार्यों के लिए आप खुद जिम्मेदार होंगे। यह आपकी डिजिटल पहचान है।
 - पासवर्ड को ऐसा बनाना चाहिए जो आसानी से आपको याद रहे। एक वैकल्पिक ई-मेल पता बनाएं
 - प्रत्येक ऑनलाइन खाते के लिए अपना मूल ई-मेल पते का उपयोग करने के बजाए सार्वजनिक रूप से खातों एवं उपयोगकर्ताओं के लिए वैकल्पिक ई-मेल पता बनाएं। एडमिन राइट न दें
 - जब भी कोई नया सॉफ्टवेयर या एप सिस्टम एडमिन राइट की मांग करे तो उसके एसेस की जांच करें, इसके कारणों की जांच दस्तावेजों से करें और यदि संभव हो तो सहायक टीम से संपर्क करें। सुरक्षा योजना बनाएं
 - अपने लिए क्या करें एवं क्या न करें, नियमित बैकअप एवं अद्यतन जानकारी के लिए अनुस्मारक से संबंधित एक जांच सूची बनाएं। कृपया साइबर सुरक्षा नीति, सूचना सुरक्षा नीति एवं सीआईएसओ कार्यालय द्वारा जारी परिपत्रों को पढ़ें। कार्ड का उपयोग करते समय सावधानी बरते
 - ऑनलाइन या किसी एप के माध्यम से खरीददारी करते समय अपने कार्ड से संबंधी जानकारी को उसमें सेव न रखें। रिकवरी जानकारी अद्यतन रखें
 - अपने खाते से संबंधित रिकवरी ई-मेल पते, फोन नंबर और भौतिक पते की जांच करें और उसे अद्यतन रखें। संदिग्ध स्रोतों से प्राप्त लिंक पर क्लिक न करें
 - अज्ञात या संदिग्ध स्रोतों से प्राप्त शॉर्ट लिंक को क्लिक न करें
- खाते की गतिविधि का अनुश्रवण**
- नियमित आधार पर अपने खातों के लिए गतिविधि लॉग का अनुश्रवण करें। ई-मेल खातों की जांच करें
 - अपने सभी ई-मेल खातों का अवलोकन करें, अनावश्यक ई-मेल को हटा दें एवं जो ई-मेल आप रखना चाहते हैं उसके लिए सख्त सुरक्षा उपाय अपनाएं। अपने डाटा का बैकअप रखें
 - अपने डाटा का बैकअप समय-समय पर अनेक डिवाइस में रखें ताकि महत्वपूर्ण जानकारी सुरक्षित रहे। अपने सॉफ्टवेयर को अपडेट करें
 - अपने व्यक्तिगत कंप्यूटर पर उपयोग किए जाने वाले किसी भी सॉफ्टवेयर को नियमित अद्यतन करना

सुनिश्चित करें। ऑटो कनेक्ट को डिसेबल करें

- सुनिश्चित करें कि यात्रा करते समय या सार्वजनिक स्थान पर आपका वाई-फाई ऑटो कनेक्ट बंद है।
मोबाइल एप एसेस पर नियंत्रण
- आधिकारिक एप स्टोर से ही कोई भी एप को इंस्टाल करें। आवधिक रूप से अपने पासवर्ड को बदलते रहिए
- सुनिश्चित करें कि आपका पासवर्ड मजबूत है और इसमें वर्ण, अक्षर एवं अंक शामिल है तथा नियमित अंतराल पर अपना पासवर्ड बदलते रहिए। अपने ब्राउज़र्स को नियमित अंतराल पर अद्यतन करें
- अपने इंटरनेट ब्राउज़र एवं इससे संबंधित प्लगइन के नवीनतम वर्जन का उपयोग सुनिश्चित करें। अपने सिस्टम को सुरक्षित रखें
- एंटीवायरस, फायरवाल, एड-ब्लॉकर सॉल्यूशन का पैच नियमित आधार पर सावधानीपूर्वक अद्यतन करना सुनिश्चित करें। सेट अप 2एफए (दो फैक्टर प्रमाणीकरण)
- अपने मोबाइल फोन और/या ई-मेल पते को अपने खाते के साथ जोड़ें ताकि जब आप साइन-इन करें तो आपकी पहचान का सत्यापन हो सके।

कृपया निम्नलिखित सावधानी रखें:

- दो कारक प्रमाणीकरण वाला अकाउंट चुनें
- एक मजबूत पासवर्ड बनाएं
- अपने कंप्यूटर को सुरक्षित और इसे अद्यतन रखें
- ईमेल के माध्यम से क्लिक करने से बचें
- सुरक्षित लोकेशन से ही अपने अकाउंट को एक्सेस करें
- जब आपका कार्य हो जाए तो हमेशा लॉग आउट करें
- अकाउंट नोटिफिकेशन को सेट करें (यदि उपलब्ध हो)
- अपने अकाउंट की नियमित रूप से निगरानी करें
- अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर प्राइवैसी सेटिंग्स लॉक करें। अनजान लोगों को मित्र न बनायें और न ही उनसे अपनी निजी जानकारी शेयर करें।

✍ विप्लव कुमार
मुख्य अनुदेशक,
सिगनल एवं दूरसंचार प्रशिक्षण केंद्र

कार्य को सम्मान

सरकारी कामकाज टिप्पण एवं प्रारूप लेखन मूल रूप से हिंदी में करने के लिए गृह मंत्रालय की बीस हजार शब्दों की डायरी प्रोत्साहन योजना, आधार वर्ष 2023-24 के दौरान साबरमती इकाई से पात्र पाए गए निम्नांकित 12 कर्मचारियों को प्रमाण-पत्र, पुरस्कार राशि व स्मृति चिह्न प्रदान कर पुरस्कृत किया गया:

सिगनल कारखाना इकाई

क्रसं	नाम सर्वश्री	पदनाम	कार्यालय	स्थान	पुरस्कार राशि
1	रामप्रवेश मंडल	वरिष्ठ लिपिक	सिगनल कारखाना	पहला	5000/-
2	सुनीता अजित	काधी	सिगनल कारखाना	पहला	5000/-
3	मनीष एच शाह	सकाप्र	सिगनल कारखाना	दूसरा	3000/-
4	छोटेलाल मीना	काधी	सिगनल कारखाना	दूसरा	3000/-
5	देवेश ए पटेल	सीसेइंजी	सिगनल कारखाना	दूसरा	3000/-
6	सौरभ कुमार गौतम	सीसेइंजी	सिगनल कारखाना	तीसरा	2000/-
7	सुबोध कुमार सिन्हा	सीसेइंजी	सिगनल कारखाना	तीसरा	3000/-

सिगनल कारखाने से इतर

क्रसं	नाम सर्वश्री	पदनाम	कार्यालय	स्थान	पुरस्कार राशि
1	भूमिका जैन	काधी	इंजीनियरी कारखाना	पहला	5000/-
2	विप्लव कुमार	मुख्य अनुदेशक	सिगनल एवं दूरसंचार प्रशिक्षण केंद्र	पहला	5000/-
3	महावीर प्रसाद धाकड़	सीसेइंजी	इंजीनियरी कारखाना	दूसरा	3000/-
4	शेख मोहम्मद फारुख	सीसेइंजी	सामान्य व भंडार	दूसरा	3000/-
5	सुनील कुमार शर्मा	मुख्य अनुदेशक	सिगनल एवं दूरसंचार प्रशिक्षण केंद्र	दूसरा	3000/-



**रेल की भाषा मेल की भाषा।
अपनी भाषा राजभाषा।**



राजभाषा विभाग, इंजीनियरी कारखाना, साबरमती ।

हास्य - प्रवाह

रुठे पति को मनाते हुए पत्नी बोली: अब गुस्सा छोड़ो और खाना खा लो। आज पनीर की सब्जी, पूरी, पुलाव और रायता बना है।

पति (और अधिक गुस्से में) : हाँ-हाँ, पता है। मैंने ही तो बनाया है।



पिता (गुस्से में): एक काम ढंग से नहीं होता तुमसे। तुम्हें पुदीना लाने के लिए कहा था और तुम धनिया ले आए। तुम जैसे बेवकूफ को तो घर से निकाल देना चाहिए।

बेटा: पापा चलो इकट्ठे ही निकलते हैं।

पिता: क्यों?

बेटा: क्योंकि मम्मी कह रही थी कि ये मेथी हैं।

दरवाज़े पर घंटी बजी नाँकर ने दरवाज़ा खोला..

मेहमान: "साहब हैं?"

नाँकर: जी नहीं, वे शहर से बाहर गए हैं।

मेहमान: क्या छुट्टी एंजॉय करने गये हैं?

नाँकर: नहीं। मेम साहब भी साथ गयी हैं।



बकवास करने से मन हल्का हो जाता है और सुनने वाले का सिर भारी। विज्ञान में इसी को 'ऊर्जा स्थानांतरण (Energy transfer)' कहते हैं।

नहाना भी अपनी समझ से बाहर है। जिस शब्द के आगे 'न' और पीछे 'ना' लगा हो तो बीच में यह दुनिया 'हा' कराने पर क्यों तुली है?

